❋ शरणागत स्तोत्र ❋

❀ सवैया ❀

उज्वल बेश बनाय यथारथ वैष्णव दिव्य सुभव्य अनूपम।
कोशलराजकिशोर के आयुध धारे यथा विधि वेद निरूपम॥
नाता जहान से आपनो तोड़ि के छोड़ि के मोह मनोज विरूपम।
युग्मअनन्य गहे सियराम को केवल आस विहाय विषयतम॥

❀ कवित्त ❀

चित्त से सदैव करै चिंतन अचल नित्य,
सीताराम परम परेशही शरन मम।
लोक परलोक में विशोक तौ न होय, धोय-
वासना समूह सुख साजे राजे एक सम॥
आपनो स्वरूप चिद पराधीन जानि,नीके-
पीके रस रहस न रहे फेरि ज्ञान गम।
युगलअनन्य सदा शरन सम्हारे उर,
अफुर अशेष सब साधन असीम सम॥

❀ कवित्त ❀

सहज स्वतंत्र देह दिव्य सत चित मोद,
घन नखसिख छवि उठत तरंग है।
आत्मा अधार शक्ति अखिल उदार गुन-
सहित अगुन गुन अंगी सुख संग है॥
नित्य शुद्ध आतम स्वरूप नेह केलि कल-
विविधि विहार कहँ परत न भंग है।
युगल अनन्य ऐसे कौशलेश रूप राम-
जानकी रमन मेरो शरन सु रंग है॥

❀ कवित्त ❀

नाम रूप गुन धाम अकथ अनूप तामे,
सीताराम जू को वेद वदत अगुन है।

बानी मन पार सुख सार है विहार सब,
ताते निराकार श्रुति सावन सुघन है॥
सदा शिव शेश सारदा गनेश गावें गुन,
पावें नहीं पार भीजे प्रेम पुन-पुन है।
युगलअनन्य श्रीअवध चारु चन्द जस-
विशद विलन्द सोई शरनद गुन है॥

❀ सवैया ❀

करता हरता भरता सब को ज़रता ते विहीन किशोर सोहावन।
व्यूह विभव अर्चा पर हूं पर कारन ईश समूह सोहावन॥
सौम्य सदा शुचि बोल विलक्षन कैसेहूं कान सुन्यो न कोहावन।
युग्मअनन्य सोई शरनागत-पाल की बानि सुचित्त चोरावन॥

❀ कवित्त ❀

नित्य मुक्त जन दिव तन सत चित घन,
सेवित सदैव सेवनीय पद-कंजवर।
भक्त अनुरक्त मुक्त विमल विरक्त बिश्व-
वासना अशक्त भजे होय के अमानतर॥
और जेते ईश मुनि नायक महीश सुर,
असुर निकर गुनगन गावैं प्रेम भर।
युगल अनन्य सीताराम की शरन जौन,
आरत हरन मुद करन प्रकाश षर॥

❀ सवैया ❀

महदादिक रूप से प्राकृत हूं पद में तिथि नित्य अनन्त विराजत।
तैसेही ब्रह्म सदा शिव विष्णु स्वरूप से सृष्टि उपाधि को साजत॥
जानकीनाथ ही की करतूति-कला से सभी कुछ भिन्न न भ्राजत।
युग्मअनन्य सोई करुनाकर के शरनागत से छवि छाजत॥

❀ कवित्त ❀

मनू महाराज आदि सुबुध स्वरूप सजि,
पालत सु सेतु सुख हेतु जग जाल जन।
नाना पंथ ग्रन्थ प्रगटाय वेद अर्थ सुचि,
सरस सदर्थ उपबृहँन पवित्र पन॥
औरहूं अनेक रीति प्रीति दरसाय तम तारि,
पर पद प्रद आपनो उदार गुन।

युगलअनन्य अवधेश ही शरन मम,
असम रहित हित सत चित मोद घन ॥

❀ कवित्त ❀

जौन देव देवपति अगतिन गति प्रद,
सहमत थापन निमित्त ऋषी मुनी तन।
धरि युग युग प्रति करुना निधान,
अभिमान से रहित मानप्रद जन छन छन ॥
जेते अग जग जीव तिनहूँ के मध्य शुद्ध,
साछी सर्वज्ञ तज्ञ सेवित सु पद धन।
युगलअनन्य सोई सीताराम अभिराम,
शरन सदैव सुखधाम मम तन मन ॥

❀ कवित्त ❀

सर्व रूप सर्व तन सर्व सत चित घन,
अघटित घटन समर्थ सदा एक सम।
भोगी सब भोग मय अभोगी अलिपित शुद्ध,
दीन जन पालक कृपाल रास रंग रम ॥
जौन दीनबन्धु सुखसिन्धु अर्चादि रूप–
धारि किये पार बहु पातकी विलीन गम।
श्रीयुगलअनन्य मेरो मालिक शरन शुभ–
अवधेश सही और नहीं त्रिभुवन मम ॥

❀ कवित्त ❀

नाना अवतार सुख सार धारि धारि धेनु,
विप्र, सुर त्रान किये करुनानिधान हैं।
दरसाय रूप परसाय वपु दीन जन,
अमित उधार कर भरे भाव भान हैं ॥
कोटिन सरितपतिहूं ते जो गंभीर गुन,
कलित सहित सर्वोपर प्रधान है।
श्रीयुगलअनन्य सोई कौशलेश मेरो इष्ट,
शरन सहाइ सुखदाई जीव त्रान है ॥

❀ कवित्त ❀

महारानी कौशिला सु कोष स्वच्छ शुक्ति सम,
सरस सदैव ताते उचित अनूप तर।

महाराज जनक जनेश नन्दिनी के कंठ-
आभरन रूप अनुराग जो सोहागवर ॥
ऐसो अनमोल मुक्त मुनिन सुचारु चित्त-
चोरन अबधचन्द अमल अमन्द पर।
श्रीयुगलअनन्य अद्भुत सुखप्रद पद,
शरन सहाय सोई मेरो कोटि पंक हर ॥

❀ कवित्त ❀

कौसिक सुबन दुख दुवन दमन मख,
पावक प्रबल बल अबल सबल कर।
महामुनि गौतम की बाम बदनाम ताको,
दियो सुखधाम अभिराम धव साम सर ॥
ताड़िका सी पापिनी कलंकिनी को दई गति,
सुमति प्रशंस करें भरे भाव प्रेम भर।
श्रीयुगलअनन्य सोई कोशलेश-सुनु राम,
मेरे हूं शरन सब भाँति से न लेश डर ॥

❀ कवित्त ❀

तोड़यो अति प्रबल पिनाकी को पिनाक जिन,
नाक बिन किये भूप अमित अपाक पन।
बोर्‌यो छमासिन्धु बीच रोष दोष भृगुनाथ,
कोटिन अनाथ को सनाथ किये सुद्ध तन ॥
मिथिलेश नन्दिनी सनेह सुख स्वाद रस,
पूर्‌यो मोद मानस समाय सत चित घन।
श्रीयुगलअनन्य मेरो तारक शरन सद,
सोई सर्बेश अवधेश सुत प्यारो जन ॥

❀ कवित्त ❀

राज्य अभिषेक उत्साह में सु दाह चाह,
आपने समेत देव पालने के हेत हीं।
जननी जनक को निदेश सुख देश पाय,
परम परेश गये बिपिन सचेत हीं ॥
धारि मुनि भूप वेष राग द्वेष हीन मन,
चित्रकूट बसे सिया लखन समेत हीं।
श्रीयुगलअनन्य सोई आरत हरन मेरो,
शरन सदैव जौन करुना निकेत हीं ॥

❀ कवित्त ❀

जहाँ पंचवटी तहाँ नाचे भुक्ति मुक्ति नटी,
जाहिर प्रमोद आभरन अनमोल नित।
ताही थल अमल अनूप लीला लाल लली,
कोटिन विधान जो चोरावे मुनिराज चित्त॥
दंडक अपूत बन पावन करन पद,
धारे तपी जपी योगी जीवन को किये हित।
श्रीयुगलअनन्य करुनेश सर्वेश सोई,
मेरो स्वच्छ शरन भरन भाव चाव वित॥

❀ सवैया ❀

खरदूषन दूषन दाम समेत सु सेन विशेष निपात किये।
करुना करिके करुनानिधि ने अति नीचन हूं को स्वधाम दिये॥
तिमि सूपनखा की सुदुष्टता देखि कटाय दियो श्रुति नाक छिये।
शरनागत पाल कृपाल सोई मोहि पालिये श्री युग्मअनन्य जिये॥

❀ कवित्त ❀

माया मृग मारि के सनेह सूचनाय सिय-
विरह व्यथान ते व्यथित भये त्यागि सुधि।
क्रीड़ा कमनीय लखे विमल विवेकवान,
ज़ाने न अजान जाते उरझी विकार बुधि॥
प्यारे बन्धु संग धरे धनुष निषंग बान,
बड़े बलवान जीते पल बीच कोटि युधि।
श्रीयुगलअनन्य जन आरत शमन सोई,
दायक शरन मेरो सदा सर्वज्ञ सिधि॥

❀ सवैया ❀

प्रानपियारी को ढूढ़त कानन माँहि रहस्य रसे रस नायक।
जाय विलोके विचित्र सरोवर पंपा सु नाम सोहावन भायक॥
नारद नेह निहारि कही कुछ वैन सचैन सुनैन प्रदायक।
श्रीयुग्मअनन्य सदा तिनही को भरोश लियो सोई मेरो सहायक॥

❀ कवित्त ❀

गीधराज नेही सिरताज को निवाजि पुनि,
दई है कवंध गति करुना निधान जू।
वीर हनुमान गुन खान से मिलाप करि,
सुष्टु कंठ मित्रता सजाय के सजान जू॥

महा बलवान बालि एक बान ही से बधि,
किये दिये राज कलकंठ जीव जान जू।
श्रीयुगलअनन्य दीन पालनोई प्रेम जिन्हें,
तिनही के शरन में मेरे हूं प्रमान जू॥

❀ कवित्त ❀

अंगदादि तोष करि करुना समुन्द श्याम-
सुन्दर कृपाल रघुलाल जीव जाल हर।
मिथिलेशनन्दिनी के ढूढ़िवे निमित्त
पठवाये चहूं पास कीश भालु भुलवाय डर॥
प्रानप्रिया हेतु मनि मुद्रिका सु वातसुत,
दिये किये विदा मोद मानि के विशेष उर।
श्रीयुगलअनन्य सोई जानकी जीवन मेरो,
दायक शरन सदा सावधान एक सर॥

❀ सवैया ❀

श्रीहनुमान महाबलवान ही पार पयोनिधि जौन करायो।
कौतुक साथ अयास बिना श्रम राक्षसी सेन समूह सिरायो॥
रावन सो बलवन्त की पालिता लंका कंगूर अगार जरायो।
श्रीयुग्मअनन्य सोई प्रणतारत मोचन के पद शीश धरायो॥

❀ सवैया ❀

रोष समेत अपार पयोनिधि बीच सुसेत निकेत सँवार्‌यो।
कौन कहे करतूति कलाकर नीर के माहि पखानहि तार्‌यो॥
घेरि लियो गढ़ रावन को पुनि सेन समेत हीं ताहि संघार्‌यो।
श्रीयुग्मअनन्य भयो शरनागत दूसरो आस भरोश विसार्‌यो॥

❀ सवैया ❀

प्रान प्रिया प्रिय प्रान प्रनय पन प्रीनन नेह निकेत किये पुनि।
प्यारो विभीषन भक्त को राज सु सम्पति सौंपि समे सुखमाधुनि॥
पुष्पकारूढ़ सनेहिन के युत होय सुधाम पयान हिये गुनि।
श्रीयुग्मअनन्य उमंग बढ्यो रघुवीर विजय जन ग्रान कथा सुनि॥

❀ सवैया ❀

आय के धाम मिले गुण ग्राम सुबन्धु सनेहिन साथ सने रुख।
बैठि के राज सिंहासन पै जननी पुरवासी वियोग दहे दुःख॥
नाम सु कीरति द्वारे असंख्य अधीन के तारे प्रजानहूं के पुख।
श्रीयुग्मअनन्य गह्यो पदपंकज आस निहारिये नैन हँसे मुख॥

❀ सवैया ❀

यज्ञ अपार किये बहुदान द्विजेश सुरेशन हूं को दिये।
पुनि आप परेश सुधर्म को पंथ सँवारि जहान के मोद लिये॥
गति गुह्य सुधाम पधारे प्रजा गन साथ कृपा परिपूरि हिये।
भने युग्मअनन्य उपाय विहीन सदा सरनागत आस लिये॥

❀ सवैया ❀

श्रीरघुवंश बिभूषन के गुन दूषन हीन सु पूषन के सम।
नेह समेत सुने जो सदा तेहि की कबहूं कछु खीज नहीं कम॥
छोड़ि के और उपाय को आसरो होय प्रसन्न रहे नित बे गम।
श्रीयुग्मअनन्य सियावर जू के कृपा ही से रंग उमंग विलासम॥

❀ सवैया ❀

शरनागत प्रीति परत्व प्रकाशक बीसऔ आठ कवित्त सवैया।
छन्द मनोहर संग सखी सुखदायक गायक कामद गैया॥
जो रुचि साथ सुपाठ करै तेहि जीव पै रीझे सिया रघुरैया।
श्रीयुग्मअनन्य असोच भयो अब बाजने लागी बिनोद बधैया॥